4 हिम्मत और हौसले की मिसाल

पाठ का परिचय

ग. अरुणिमा के कौन-से शब्द उनकी हिम्मत और हौसले की मिसाल है?

2. **रिक्त स्थानों को पूरा कीजिए–**

क. हादसे से पहले तक अरुणिमा एक राष्ट्रीय स्तर की वॉलीबॉल खिलाड़ी थीं।

ख. छब्बीस वर्षीय अरुणिमा सिन्हा ने 21 मई 2013 को हिमालय के सर्वोच्च शिखर एवरेस्ट पर कदम

ग. अरुणिमा ने 8,848 मीटर ऊँची चोटी पर पहुँचकर अपनी ज़िद पूरी की।

7. अ

1. ए

2. “

नीचे दिए संज्ञा शब्दों के सामने उनके भेद का नाम लिखिए–

क. अरुणिमा – व्यक्तिवाचक

ख. महिला – जातिवाचक

ग. कैमरा – जातिवाचक

घ. हिम्मत – भाववाचक

ङ. दिल्ली – व्यक्तिवाचक

च. दिव्यांगता – भाववाचक

छ. अस्पताल – जातिवाचक

ज. सच्चाई – भाववाचक संज्ञा

2. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए–

कठिन – कठिनाई

अपना – अपनत्व

सहज – सहजता

साहसी – साहस

सफल – सफलता

कमज़ोर – कमजोरी

3. दो वर्णों के परस्पर मेल से जो विकार या परिवर्तन होता है, उसे **संधि** कहते हैं; जैसे– हिम + आलय = हिमालय (यहाँ 'हिम' शब्द के 'अ' और 'आलय' शब्द के 'आ' में संधि हुई है।)

संधि के कुछ अन्य उदाहरण स्वयं लिखिए।

4. उपसर्ग और मूलशब्द को अलग-अलग करके लिखिए–

शब्द		उपसर्ग		मूलशब्द
निडर	=	नि	+	डर
कमज़ोर	=	कम	+	ज़ोर
बेशक	=	बे	+	शक
दुर्घटना	=	दुर	+	घटना
प्रशिक्षण	=	प्र	+	शिक्षण

लघु उत्तरीय प्रश्न (Short answer questions)

1. दिल्ली के संविधान क्लब में अरुणिमा सिन्हा की आवाज़ में झलकते विश्वास, पत्रकारों की भीड़ और कैमरों की फ़्लैश लाइट्स के बीच उनकी सहजता को देखकर लोग अचंभित थे।

2. एक रेलयात्रा के जानलेवा हादसे के दौरान चोर-बदमाशों के द्वारा चलती ट्रेन से बाहर फेंक दिए जाने के बाद उनके बाएँ पैर को काटना पड़ा तथा दाएँ पैर में छड़ लगानी पड़ी। इन विपरीत परिस्थितियों में भी अरुणिमा कमज़ोर नहीं पड़ीं। इस दुर्घटना के बाद उनके जीवन को एक नई दिशा मिली।

3. अस्पताल से निकलने के बाद अरुणिमा सिंह ने बचेंद्री पाल को फ़ोन किया क्योंकि अरुणिमा ने भी एवरेस्ट पर चढ़ने का दृढ़ का निश्चय कर लिया था और वे उनसे प्रशिक्षण पाना चाहती थीं।

4. अरुणिमा दुनिया के सबसे ऊँचे शिखर एवरेस्ट पर पहुँचने के क्षण को कैनवस पर उतारना चाहती थीं।

5. अरुणिमा के साथियों के अनुसार वे बहुत मज़बूत तथा निडर महिला थीं। उनमें कुछ भी कर पाने की हिम्मत और हौसला था।

6. हिमालय की चोटी पर पहुँचकर अरुणिमा ज़ोर से चिल्लाकर दुनिया को बताना चाहती थीं कि वे आज दुनिया के सबसे ऊँचे शिखर पर हैं। अपनी सफलता के इस अभूतपूर्व दृश्य को वे कैनवस पर उतारना चाहती थीं।

7. प्रशिक्षण के दौरान अरुणिमा को कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ा। उन्हें हर कदम पर कड़ी मेहनत करनी पड़ी, परंतु अपने मजबूत हौसले के बल पर उन्होंने प्रशिक्षण की सभी धाराओं पर विजय हासिल की।

उन्होंने प्रशिक्षण की सभी धाराओं पर विजय हासिल की।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long answer questions)

1. पत्रकारों को संबोधित करते हुए अरुणिमा का आत्मविश्वास झलक रहा था। उनकी आवाज़ में बहुत जोश एवं सच्चाई थी। पत्रकारों की भीड़ तथा कैमरों के तेज़ प्रकाश के बीच वे बेहद सहज थीं और कई लोगों के लिए यह अत्यंत आश्चर्यजनक भी था।
2. माउंट एवरेस्ट की चढ़ाई के दौरान उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। उन्हें कदम-कदम पर सामान्य लोगों की अपेक्षा कड़ी मेहनत करनी पड़ी। चोटी से लौटते समय उनके शरीर में गरमी इतनी अधिक बढ़ गई थी कि ऐसा लगने लगा था कि उनका नकली पैर पसीने के कारण फिसलकर बाहर आ जाएगा, लेकिन वे उसे घसीटते हुए नीचे कैंप तक जा पहुँची। अपने मजबूत हौसले के बल पर उन्होंने प्रशिक्षण की सभी बाधाओं पर विजय हासिल की।
3. रेल-दुर्घटना में अपने पैर खो देने के बाद भी अरुणिमा ने अपने लिए सबसे चुनौती पूर्ण कार्य चुना। अरुणिमा कुछ ऐसा करना चाहती थीं कि जिससे दूसरे लोगों को प्रेरणा मिल सके। इसके लिए उन्होंने बछेंद्रीपाल के निर्देशन में एवरेस्ट पर विजय पाने के लिए अपना प्रशिक्षण शुरू कर दिया। 8,848 मीटर ऊँची चोटी पर पहुँचकर अपनी ज़िद पूरी की। इसके लिए उन्होंने एक साल कड़ी मेहनत की और 52 दिन की खतरनाक यात्रा की।
4. अरुणिमा का मानना है कि विकलांगता व्यक्ति की सोच में होती है। हर किसी के जीवन में पहाड़ से ऊँची कठिनाइयाँ आती हैं। जिस दिन वह अपनी कमज़ोरियों को ताकत बनाना शुरू करेगा, हर ऊँचाई बौनी-सी लगने लगेगी।

अरुणिमा के इन विचारों से मैं पूरी तरह सहमत हूँ। वास्तव में बाधाएँ हम पर तभी तक हावी होती हैं, जब तक हम डटकर उनका सामना करने से कतराते हैं। हिम्मत और साहस–वे जीवनदायिनी शक्तियाँ हैं जिनके बल पर चुनौतियों से लड़ा जा सकता है।

5. (हिम्मती) (मेहनती) (बुलंद हौसला) (आत्मविश्वासी)

क. गोलाकार किए गए शब्द पात्र की विशेषता बताते हैं क्योंकि अरुणिमा आत्मविश्वासी थीं। अपनी मेहनत, हिम्मत और बुलंद हौसले के बल पर ही उन्होंने अपना लक्ष्य प्राप्त किया।

ख. अन्य शब्द पात्र की विशेषता नहीं बताते क्योंकि अभिमान उन्हें छू भी नहीं गया था।

ग. मेरे अनुसार पात्र की विशेषता के लिए ये शब्द भी उपयुक्त है क्योंकि वे बहुत निडर थी क्योंकि उनमें कुछ भी कर पाने की हिम्मत थी।

6. इस पाठ में हमें यह संदेश मिलता है कि हिम्मत, हौसले और दृढ़ इच्छा शक्ति के बल पर कुछ भी पाया जा सकता है। ये ऐसी जीवनदायिनी शक्तियाँ हैं जिनके बल पर असाध्य लक्ष्य को भी हासिल किया जा सकता है।

7. भविष्य की अपनी योजनाओं के बारे में अरुणिमा कहती हैं कि वे बच्चों के लिए एक खेल अकादमी की शुरुआत करना चाहती हैं। वे इस अकादमी के माध्यम से गरीब और विशेष रूप से अक्षम (दिव्यांग) बच्चों को खेल में हिस्सा लेने के लिए प्रेरित करना चाहती हैं। वे अकादमी के प्रतिभावान तथा जरूरतमंद बच्चों को मुफ्त में प्रशिक्षण देना चाहती हैं।